Date:
Page No.

"हिन्दी एकांकी की परिभाषा एवं भेद"

आधुनिक दृश्य साहित्य के अन्तर्गत एकांकी का महत्वपूर्ण स्थान है। एकांकी में किसी विशेष उद्देश्य की अभिव्यक्ति के लिए एक ही प्रभाव की पुष्टि सृष्टि की जाती है। कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक प्रभाव एकांकी का लक्ष्य होता है। आकार में छोटा होने के कारण एकांकी में जीवन का खण्ड चित्र प्रस्तुत होता है। अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से एकांकी को परिभाषित करने का प्रयास किया है, जिनमें कुछ प्रमुख हैं — डॉ० गोविन्द दास के अनुसार, "एकांकी में जीवन से संबंधित किसी एक ही मूल भाव या विचार की एकान्त अभिव्यक्ति होती है।" आधुनिक एकांकी के जनक डॉ० रामकुमार वर्मा ने एकांकी की परिभाषा देते हुए लिखा है, "एकांकी नाटक में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है, और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कौतूहल का संचय करते हुए चरम-सीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भाँति खिलकर पुष्प की भाँति

विकसित हो उठती है।" हिन्दी के जाने-माने एकांकीकार उपेन्द्रनाथ अश्क के अनुसार, "बड़े नाटक की तुलना में एकांकी जीवन के एक अंग का पृथक विच्छिन्न स्वरूप उपस्थित करता है तथा जीवन की एक झाँकी मात्र देता है।" प्रख्यात समीक्षक एवं हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, "एकांकी में हमें जीवन का क्रमबद्ध विवेचन न मिलकर उसके एक पहलू, एक महत्वपूर्ण घटना, एक विशेष परिस्थिति अथवा एक उद्दीप्त क्षण का चित्रण मिलेगा। उसके लिए एकता और एकाग्रता अनिवार्य है।" डॉ० दशरथ ओझा के मतानुसार, "जिस नाटक में नायक जीवन के एक ही लक्ष्य को प्रमुखता देने के लिए उत्तेजक, सूचक अथवा प्रभाव व्यंजक पात्रों की सहायता से घटनाओं तथा भाव-विचारों की तहें खोलता हुआ हमारी जिज्ञासा को उभारकर या तो संतुष्ट कर देता है अथवा किसी उलझन में छोड़ देता है, वह एक अंक में समाप्त होने वाला नाटक एकांकी है।" नाट्य-मर्मज्ञ डॉ० रामचरण महेन्द्र के अनुसार, "एकांकी में आधार रूप से एक ही मुख्य घटना या जीवन की एक प्रमुख संवेदना होनी चाहिए, जिसका विकास कौतूहल और जिज्ञासापूर्ण

Date:
Page No.

नाटकीय शैली में होना चाहिए। चरमसीमा पर पहुँचकर एकांकी का अन्त होना चाहिए।"

वस्तुतः उपर्युक्त सभी विद्वानों के मतों या विचारों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि एकांकी नाट्य साहित्य की वह विधा है, जिसमें मनुष्य जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक घटना तथा एक समस्या का चित्रण पूर्ण नाटकीयता और कलात्मकता के साथ इस तरह किया जाता है कि वह दर्शक या सुधि पाठक को न केवल भावाभिभूत कर ले, बल्कि उसे वर्ण्य-विषय पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन-मनन करने के लिए भी प्रेरित करे।

एकांकी के भेद —

एकांकी के भेदों (प्रकारों) का निर्धारण दो आधारों पर किया जा सकता है, पहला विषय-वस्तु के आधार पर और दूसरा शिल्प या संरचना के आधार पर।

विषय वस्तु के आधार पर एकांकी के निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं —

(i) पौराणिक एकांकी
(ii) ऐतिहासिक एकांकी
(iii) सामाजिक एकांकी
(iv) राजनीतिक एकांकी
(v) मनोवैज्ञानिक एकांकी

(vi) चरित्र प्रधान एकांकी
(vii) अर्थपूर्ण या समस्यामूलक एकांकी आदि।
शिल्प या संरचना या बनावट के आधार पर एकांकी के निम्न भेद हो सकते हैं—
(i) एकपात्रीय एकांकी
(ii) रूपक या रेडियो फीचर एकांकी
(iii) गीति-नाट्य एकांकी
(iv) रेडियो एकांकी आदि।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि एकांकी में एक ही घटना या जीवन की एक ही सम्वेदना रहनी चाहिए। हर-हाल में इसमें अन्त तक जिज्ञासा बनी रहनी चाहिए। कथा का विकास तीव्र गति से होना चाहिए। कथा में यथार्थ का सहज, स्वाभाविक चित्रण हो तथा साथ-ही-साथ वह जीवन के अत्यन्त निकट प्रतीत हो।